JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

साहित्य समाज में चित्रित बिम्ब

लेखिका:डॉ दीपा अंटिन

रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय

संगोल्ली रायन्ना प्रथम श्रेणी घटक महाविद्यालय

बेलगावीए कर्नाटक

साहित्य समाज के विभिन्न कालखण्डों में घटित घटनाओं को पात्रों के संवादों के माध्यम से विचारों में पिरोकर प्रस्तुत करता है अपने प्रस्तुतीकरण में घटनाओं पत्रों एवं विचारों से साहित्य का जो स्वरूप उभरकर सामने आता है उसी में बिम्बो को देखा जा सकता है। बिम्बो का स्वरूप समय या कालखंड में घटित परिस्थितियों में भी तय होता है। जिससे साहित्य निर्मित होता है। इसे स्पष्ट करने के लिए ही विभिन्न आलोचकों एवं साहित्य जगत से जुड़े मनीषियों के विचार जिन्होंने कभी साहित्य को समाज का श्दर्पणश कहा तो कभी श्दीपकश कभी श्डायनेमोश। दर्पण से तात्पर्य है कि साहित्य में वही दिखता है जो समाज में मौजूद होता है। किसी भी समाज में जिस तरह की सामाजिकए आर्थिकए राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियाँ होंगी उसका बिम्ब भी साहित्य में उसी तरह दिखेगा। बाद के आलोचकों ने श्दर्पणवादीश सिद्धांत का खंडन करते हुए कहा कि दर्पण में केवल वही दिखाई देगा जो उसमें दिखाया जाएगा। इसमें श्दर्पणश की भूमिका सीमित हो जाती है। इसीलिए साहित्य समाज का दर्पण नहीं श्दीपकश है। श्दीपकश के प्रकाश को जहां-जहां दिखाया जाएगा वहां वहां दिखाई देगा साथ ही दीपक के प्रकाश से वहां मौजूद सभी वस्तुएं भी स्पष्ट दिखाई देंगे। इसी तरह तीसरा सिद्धांत श्डायनेमोश का दिया गया। इन सिद्धांतों के आधार पर यह कहा जा सकता हैए कि साहित्य की अपनी सीमाएं हैं और यह साहित्यकार की अभिव्यक्ति क्षमता पर निर्भर करता हैए कि वह किस तरह साहित्य को समाज से जोड़ता है और साहित्य में सामाजिक स्थितियों को किस तरह पिरोता है। यहां पर साहित्य समाज से संबंध स्थापित करते हुए एक रूपरेखा का निर्माण करता है जो बिंदुओं के रूप में उभरता है।

भारतीय साहित्य में बिंदुओं का स्वरूप समय-समय पर बदलता रहा हैए उसे वैदिक कालीन साहित्य से समकालीन साहित्य तक में देखा जा सकता है। वैदिक कालीन युग के साहित्य ने जिस रूप को ग्रहण किया वह प्रकृति एवं मानव समाज के उदीयमान स्थिति का प्रतीक है। यह वही समाज है जिसमें यायावरी जीवन को छोड़कर अब स्थायित्व की स्थिति की और बढ़ते हुए ज्ञान एवं कल्पना को साथ लेकर प्रकृति और मानव के संबंधों के बीच से बिम्ब ग्रहण कर रहा था। यही वजह है कि ऋग्वेद में यज्ञ की प्रक्रिया में हवन करना

तथा उसमें देवताओं को अर्पित करने वाले विचार बिम्बो के रूप में दिखाई देते हैं। समाज प्राकृतिक प्रकोपों को नियंत्रित करने के लिए जादू टोना एवं ताबीज जैसी वस्तुओं को अपने व्यवहार में शामिल करता है। जिसे बाद के रचित वेदों में देखे जा सकते हैं। कर्मकांड की भरमार से प्रकृति का रूप देवताओं की शक्ल में परिवर्तित होता दिखाई देता है और स्वर्ग नर्क जैसी कल्पना करके इसे आस्था एवं विश्वास के साथ जोड़ दिया गया है। यह आस्था एवं विश्वास बाद के धार्मिक ग्रंथो जैसे पुराणोंए रामायण अथवा महाभारत में स्पष्ट रूप से नजर आते हैं। इसी के समकालीन समाजों में अन्य दर्शनों का आगमन जैसे बौद्ध दर्शनए जैन दर्शन भौतिकवादएशून्यवाद ने एक अलग रूप ग्रहण किया इसके स्वरूप को अलग-अलग करके देखा जा सकता है। अब यह दर्शन कर्मकांड की स्थिति से निकलकर एक तार्किक स्थिति को प्राप्त करता है और साहित्य में गौतम बुद्ध के जीवन को एक नए रूप में प्रस्तुत करने के लिए एक क्षेत्र का निर्माण करता है। गौतम बुद्ध की जीवनी के बिंबो को श्ललितविस्तारश जैसे ग्रथों में देखा जा सकता है। रामायण और महाभारत में नए विचारों को रखकर बिम्ब किया गया है। रामायण में जहां सत्ता के सुख को छोड़कर वनवास ग्रहण करना आदर्श समझा गया है वही इस सत्ता प्राप्ति के लिए कौरव पांडवों के बीच के युद्ध को महाभारत में देखा जा सकता है इन्हीं बिम्बों को आधार बनाकर एक साहित्य जहां आदर्श राज्य की स्थापना का संदेश देता है वहीं दूसरे में राज्य के दूसरे पक्ष को दर्शाता है। इस आधार पर बिम्बो के प्रयोग की भी समीक्षा की जा सकती है। यहां यह भी तय करना है कि समसामयिक स्थिति में समाज में क्या-क्या घटनाएं घट रही है और वे घटनाएं किस प्रकार पत्रों को साथ लेकर विचारों को प्रभावित करती है।

भक्ति कालीन साहित्य में संत भक्तों की वाणियों में पूर्ववर्ती साहित्य से भिन्न रूप दिखाई देता है। अब युद्ध के स्थान पर संतों द्वारा प्रेम एवं भक्ति को स्थापित करते नजर आते हैं। प्रेम को कई रूपों में दिखाया गया जो विभिन्न धर्मो के अंतर्गत दर्शनों के आधार पर निर्मित हुए राम एवं कृष्ण की आराधना की परंपरा चल पड़ी और निर्गुण सगुण धाराओं के आधार पर नए बिम्बों को जन्म दिया जाने लगा। यह दर्शन जहां एक और भक्ति भाव के अभौतिक बिम्ब की व्याख्या कर रहा था वही बाद के दिनों में भौतिकता के क्षेत्र में श्रृंगारीकता को भी जन्म देता नजर आता है। रीतिकाल में भक्ति का स्थान रीति ने ले लिया अब कृष्ण को नए बिंबो में प्रयोग कर भौतिक रूप में स्थापित कर दिया गया ।नख शिख वर्णन ने स्त्री के पहले के रूप को बदलकर एक नए

रूप में स्थापित कर दिया गया।इन बदलते संदर्भो में साहित्य ने देवताओं को भी नहीं छोड़ा। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में बिम्बो की बहुलता पाते हैं। इससे पूरवृत्ति कालो की रचना प्रक्रिया में एक ही तरह के विचार साहित्य में समाए हुए हैंए जैसे वीरगाथा काल में विरोचित भाव का बिम्ब है। तो भक्ति काल में भक्ति का और रीतिकाल में रीति परक आधुनिक काल की परिस्थितियां अपने से पहले के कालों से काफी उथल-पुथल भरी रही है। 1857 की क्रांति से लेकर 1947 की आजादी की लड़ाई तक साहित्य में बिम्ब विभिन्न रूपों में नजर आते हैं। अब गद्य के साथ-साथ पद्य रूप में भी बिम्बों के लिए एक नया एवं विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया किया। इसकी शुरुआत भारतेंदु काल से ही आरंभ हो जाती है। गद्य के क्षेत्र में जहां खड़ी बोली को अपनाया जा रहा था वही पद्य भी अपने पुराने केंचुल को छोड़ता नजर आ रहा था। गद्य के विकासकाल से संवृद्धि काल तक के नाटकों से लेकर उपन्यासए कहानीए निबंधए संस्मरणए

रेखाचित्र आदि तक की यात्रा में अनेकों बिम्बो को ग्रहण करता नजर आता है।

भारतीय ग्रामीण समाज का चित्रण विस्तृत रूप से गद्य में पाया जाता है। समाज के किसनों शिल्पकारों आदि को नए-नए रूपों में प्रस्तुत किया जा रहा था। फकीर मोहन सेनापति के श्छः मास आठ गुटश उड़िया उपन्यास में किसान जीवन को एक नए रूप में प्रस्तुत करने की शुरुआत की जिसे बाद में हिंदी

भाषा साहित्यकार प्रेमचंद विकसित करते नजर आते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण श्गोदानश्नामक उपन्यास हैए जिसमें होरी (किसान) की त्रासदी से भारतीय समाज की रीड समझी जानेवाली कृषि व्यवस्था की पोल को खोलती नजर आती है। गोदान जो हिंदू जीवन का अंतिम संस्कार है वह श्अभौतिकता को भौतिक बिम्बोश में समेटकर दिखाने का प्रयास है इन्हीं की कहानी रूपांतर श्पूस की रातश में देख सकते हैं। इसी प्रकार ऋण को लेकर श्सवा सेर गेहूंश श्रमिक एवं पारिश्रमिक को लेकर श्कफनश आदि कहानियों में देखा जा सकता है। सामाजिक मूल्यों की बिंबो में गद्य की अभिव्यक्ति सशक्त रूप से सामने आई है। नाटकों में प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करने की प्रबल इच्छा जयशंकर प्रसाद के नाटक श्चंद्रगुप्तश में पाए हैं साथ ही चंद्रगुप्त और सेल्यूकस के बीच युद्ध को अरस्तु और चाणक्य के विचारों के बीच की टकराहट के रूप में रखकर प्रसाद एक नए बिम्बो की रचना करते हैं। समाज में मध्यम वर्ग की स्थिति को यथार्थ रूप में प्रकट करने के लिए अनेक कहानीकारों एवं उपन्यासकारों ने सफल भूमिका निभाई।जिनमे प्रेमचंद द्वारा रचित श्सेवा सदनश श्कर्मभूमिश श्गबनश श्निर्मलाश आदि उपन्यास महत्वपूर्ण है। इन उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी दृष्टिकोण से दर्शाया गया है। इसी क्रम में जयशंकर प्रसाद कृत श्कंकालश व श्तितलीश उपन्यास जिनमे वैयक्तिक समस्याओं को विभिन्न सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में दिखाया गया है। ऐतिहासिक उपन्यास श्झांसी की रानीश वृंदावन लाल वर्मा द्वारा रचित है। जिसमें रानी लक्ष्मीबाई की कथा को लिया गया है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना भी हुई जिनमें जैनेंद्र के श्परखश एश्सुनीताश्ए श्कल्याणीश तथा श्त्यागपत्रश महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस युग के साहित्य में वर्ण्य विषयों की विविधता है। सामाजिकए ऐतिहासिकएमनोवैज्ञानिक सभी प्रकार के साहित्य की रचना हुई। समाज में जैसे-जैसे परिवर्तन होता गया वैसे-वैसे साहित्य में निहित विचार भी अपने युग से प्रभावित होते रहे और नए-नए साहित्यिक बिंबो की रचना करते रहे। आधुनिक काल के पद्य में बिम्बो की भरमार पाते हैं। भारतेंदु काल में सामाजिकए सांस्कृतिक स्थिति पर कई काव्य व्यंग्य के रूप में दिखते हैं। छायावाद में आकर बिम्ब पूर्ण रूप को ग्रहण करता है। इस काल में प्रकृति का मानवीकरण कर एक नए बिम्ब को उत्पन्न किया गया। इसे पंतएप्रसादए निराला व महादेवी ने अपनी अपनी कृतियों में पूर्ण रूप से दर्शाया है। पंत का श्प्रथम रश्मिका आना रागिनी तूने कैसे पहचानाश प्रसाद के चंद्रगुप्त नाटक का गीत श्अरुण यह मधुमय देश हमाराश और कामायनी में मानवीय भावों को मानव के रूप में प्रस्तुतीकरण अनेकों बिम्बो को उभरता है। निराला श्राम की शक्ति पूजाश में जहां पुराने मिथिक को एक नए बिम्ब में प्रकट होता है वहीं श्सरोज स्मृतिश में सामाजिक यथार्त को दर्शाते भी नजर आते है। साहित्य में धाराएं बदलती रही है और आगे आने वाली धाराओं में स्त्री और दलित जीवन से संबंधित साहित्य नए-नए बिंदुओं को बनता नजर आता है। स्त्री अभिव्यक्ति घर की चौखट से निकलकर अब सड़क पर रफ्तार पकड़ रही है। अपनी संवेदनाओं को साहित्य की सभी विधाओं में प्रकट कर रही है। इसमें स्त्री सदियों से चली आ रही शोषण और अत्याचार की स्थितियों के शिकार होकर भी समस्याओं से जूझ रही स्त्री को दर्शाया गया है। प्रमुख स्त्री साहित्यकार प्रभा खोतानए कृष्णा सोबतीए मैत्री पुष्पाए मन्नू भंडारीए नासिरा शर्माए अमृता प्रीतमए चित्रा मुद्गलएमृदुला गर्गए उषा प्रियंवदाए चंद्रकांता आदि जिन्होंने अपने साहित्य में परिस्थितियों से जूझती स्त्री के संघर्ष को दर्शाया है और सशक्त साहसी स्त्री का बिम्ब प्रस्तुत किया है। भारतीय साहित्य में बिंदुओं की अभिव्यक्ति समसामयिक स्थिति से उत्पन्न स्थिति पर विचारों को समाहित करके की गई। जब जैसा समाज रहा है उसकी सोच उसी के अनुरूप रही है। यही वजह है कि विभिन्न समाजों के साहित्य की अभिव्यक्ति अलग-अलग रही हैए और उसके मूल्य भी अलग रहे हैं। मूल्य में अंतर होने से उसके साहित्यिक बिंबो पर भी प्रभाव देखा जा सकता है। आधुनिक काल में विज्ञान एवं कला के विकास में नए-नए मूल्यों को जन्म दिया है। जिससे बिम्बो के और नए रूप उभर कर आने की संभावनाएं बनी है।